International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 20-09-2025, Accepted: 20-10-2025, Published: 04-11-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 61-63

उत्तर औपनिवेशिक अध्ययन

आकिब जावेद
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
उत्तर औपनिवेशिक अध्ययन आधुनिक आलोचना की वह महत्वपूर्ण दिशा है, जिसका प्रभाव उपनिवेशवादी विचारधारा और उसके बाद उत्पन्न भाषिक,सांस्कृतिक तथा राजनीतिक प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करती है। यह अध्ययन केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक ही सीमित नहीं है, बल्कि बौद्धिक, सांस्कृतिक और मानसिक स्वतंत्रता की खोज का भी प्रतीक है। उत्तर औपनिवेशिक चिंतन का उद्देश्य उन सत्ता–संरचनाओं और भाषिक प्रभुत्वों को प्रकाशित करना है, जो औपनिवेशिक शासन के करण से समाजों में गहराई तक व्याप्त हो गए थे। उत्तर औपनिवेशिकता एक विमर्श है, जो उपनिवेशित समाज की मनःस्थिति का अध्ययन करता है।उत्तर औपनिवेशिक विमर्श के अंतर्गत यूरोपीय औपनिवेशिक मानसिकता के प्रतिरोध में विकसित हुए विचारों का अध्ययन किया जाता है। एडवर्ड सईद, गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक, होमी के. भाभा, बिल ऐशक्रॉफ्ट आदि सिद्धांतकारों ने उत्तर औपनिवेशिकता को केवल एक सैद्धांतिक प्रतिरोध के रूप में नहीं, बल्कि एक वैचारिक मुक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि औपनिवेशिकता ने 'अन्य' (The Other) की अवधारणा के माध्यम से किस प्रकार उपनिवेशित समाजों की पहचान, भाषा और संस्कृति को नियंत्रित किया।

मूल शब्द: उपनिवेशवाद,उत्तर औपनिवेशिकता, साम्राज्यवाद, पूँजीवाद, प्रभुत्व, प्रतिरोध, स्वतंत्रता,औपनिवेशिक मानसिकता, राष्ट्रवाद, अन्य (The Other)

प्रस्तावना
मानव सभ्यता के इतिहास में उपनिवेशवाद (Colonialism) एक ऐसा समय रहा है, जिसने विश्व के आर्थिक,सांस्कृतिक और राजनीतिक परिदृश्य को गहराई से प्रभावित किया। यूरोपीय शक्तियों द्वारा एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देशों पर शासन स्थापित करने की प्रक्रिया ने न केवल भौगोलिक सीमाएँ बदलीं, बल्कि वहाँ की भाषाओं, परंपराओं, धर्मों और सामाजिक संरचनाओं को भी पुनर्परिभाषित किया। उपनिवेशवाद का उद्देश्य केवल आर्थिक दोहन या राजनीतिक नियंत्रण तक सीमित नहीं था, बल्कि यह मानसिक और सांस्कृतिक स्तर पर प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास भी था। इसी प्रभुत्व की प्रतिक्रिया के रूप में 'उत्तर औपनिवेशिक विमर्श' का उद्भव हुआ। उत्तर औपनिवेशिक विमर्श मूलतः औपनिवेशिक सत्ता द्वारा रचित विचारधारा, भाषा और संस्कृति के प्रभुत्व का विरोध करता है। यह विमर्श यह प्रश्न उठाता है कि स्वतंत्रता प्राप्त कर लेने के बाद भी क्या उपनिवेशित समाज वास्तव में मानसिक रूप से स्वतंत्र हो पाए हैं? औपनिवेशिक सत्ता ने जो मानसिक ढाँचा और मूल्य प्रणाली थोप दी थी, वह अब भी आधुनिक समाज के भीतर किस रूप में जीवित है– यही इस विमर्श का केंद्रीय विषय है। बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में, विशेषकर 1970 के दशक के बाद, उत्तर औपनिवेशिकता एक महत्वपूर्ण आलोचनात्मक पद्धति के रूप में उभरी। इस विचारधारा की नींव एडवर्ड सईद की प्रसिद्ध कृति Orientalism (1978) से मानी जाती है। सईद ने यह तर्क दिया कि पश्चिमी जगत ने "पूरब" (Orient) को एक "अन्य" (Other) के रूप में चित्रित किया – एक ऐसी सांस्कृतिक इकाई, जो पश्चिम से भिन्न और निम्नतर मानी गई। यह अवधारणा केवल राजनीतिक शक्ति का नहीं, बल्कि ज्ञान, भाषा और संस्कृति के माध्यम से मनोवैज्ञानिक नियंत्रण का भी प्रतीक थी।

उद्देश्य
इस शोध–पत्र का प्रमुख उद्देश्य उत्तर औपनिवेशिक विमर्श की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि, उसकी अवधारणाओं और उसके वैचारिक प्रभावों का सम्यक अध्ययन करना है। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझना है कि उपनिवेशवाद ने केवल राजनीतिक और आर्थिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, भाषिक और मानसिक स्तर पर भी गहरा प्रभाव डाला। उत्तर औपनिवेशिक चिंतन इस प्रभाव के प्रतिरोध और पुनर्परिभाषा की प्रक्रिया है।

इस शोध–पत्र के विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं–
1. उत्तर औपनिवेशिक विमर्श की उत्पत्ति और विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करना।
2. उत्तर औपनिवेशिक विमर्श को एक आलोचनात्मक पद्धति के रूप में स्थापित करना, जो आधुनिक साहित्य और समाज दोनों के लिए प्रासंगिक है।
3. यह समझना कि उपनिवेशवाद के पश्चात भी किस प्रकार उसकी मानसिकता और सांस्कृतिक प्रभुत्व समाजों में बने रहे।

उपनिवेशवाद
उत्तर–औपनिवेशिकतावाद साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में उपनिवेशवाद की परिघटना को केन्द्र में रख कर चलता है। योरपीय साम्राज्यवाद के इतिहास ने उपनिवेशों के भीतर कितने व्यापक और जटिल परिवर्तनों को अंजाम दिया, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी उपनिवेश बना लिए गए देशों पर इस दौर की कैसी छाया रही, क्या चीजें उत्तर–औपनिवेशिक दौर में कायम रहीं, कौन से आयाम रूप बदल कर टिके रहे और कौन से आयाम लुप्त या नष्ट हुए, इन सबका अध्ययन समकालीन मानविकी और समाज विज्ञानों का प्रमुख विषय है। साहित्य, संस्कृति और ज्ञान सिद्धांत के स्तर पर उपनिवेशवाद ने भावों की कैसी संरचनाओं को जन्म दिया, कौन–सी खामोशियाँ और कैसी मुखरताएँ पैदा कीं, 'आत्म' और 'अन्य' के अन्तर्सम्बन्धों का कैसा विमर्श रचा, साहित्य की किन विधाओं में औपनिवेशिक अनुभवों की कैसी अभिव्यक्ति हुई और भाषा तथा संस्कृति पर इस अनुभव ने कौन से प्रभाव डाले, ये सब कुछ उत्तर–औपनिवेशिक विमर्श का हिस्सा है।
उपनिवेशवाद को समझने से पहले हमें 'उपनिवेश' (colony) के अर्थ को देखना होगा। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार 'Colony' शब्द लैटिन शब्द 'Colonia' से व्युत्पन्न हुआ है, जिसका प्रयोग किसान, खेतिहर कृषक, बागान मालिक या किसी नये देश में बसने वाले के लिए होता है। 'औपनिवेशिक

Colonial' शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया गया है–किसी उपनिवेश से जुड़ा या संबंधित विशेष रूप से ब्रिटिश उपनिवेश से।

इस प्रकार किया 'उपनिवेशवाद Colonialism' शब्द का अर्थ हुआ–[1]."किसी वस्तु के औपनिवेशिक होने की प्रक्रिया या ढंग जो प्रायः उजड्ड या गँवार के समानार्थी प्रयुक्त होता है।[2]. औपनिवेशिक सिद्धान्त या तन्त्र–व्यवस्था आज प्रायः पिछड़े या असहाय एवं शक्तिहीन जनता पर शक्तिशाली राज्य द्वारा किये शोषण की नीतियों के लिए होता है। अपमानजनक रूप में भी इसका प्रयोग होता है।"[1]

इस प्रकार उपनिवेशवाद का तात्पर्य है–"शक्तिशाली राज्य द्वारा अपनी भौगोलिक सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए किसी अन्य राज्य के क्षेत्रफल पर कब्जा जमाना तथा अपनी संप्रभुता का विस्तार करना।"[2] उपनिवेशकर्ता राज्य मुख्य रूप से उपनिवेशित देश के श्रम, स्रोत और उसके बाज़ार का अधिग्रहण करते हैं, साथ ही अपनी सामाजिक–सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषाई संरचनाओं का निर्माण करके देशी जनता पर उसे थोप देते हैं। इसे 'सांस्कृतिक साम्राज्यवाद'के नाम से भी अभिहित किया जा सकता है। सीधे–सीधे यह कहा जा सकता है कि यह बलशाली राज्य द्वारा अपेक्षाकृत कमज़ोर राज्य में एक राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक हस्तक्षेप है।

उत्तर औपनिवेशिक अध्ययन: परिभाषा और विकास

उत्तर औपनिवेशिक विमर्श उस विचारधारा और आलोचनात्मक दृष्टिकोण को कहते हैं, जो 'उपनिवेशवाद' के प्रभाव, उसकी सत्ता संरचनाओं, भाषाई प्रभुत्व और सांस्कृतिक प्रभावों का विश्लेषण करता है। यह विमर्श उपनिवेश के दौरान और उसके बाद उत्पन्न मानसिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रतिरोध को समझने का माध्यम है। उत्तर औपनिवेशिकता केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं है; यह औपनिवेशिक प्रभाव से उत्पन्न मानसिक संरचनाओं और सांस्कृतिक दबावों को पहचानने और उनका विरोध करने का एक सशक्त माध्यम है।

'द एम्पायर राइट्स बैक' के लेखकों (बिल ऐशक्राफ्ट, गैरेथ ग्रिफिथ्स और हेलेन टिफ़िन) ने उत्तर औपनिवेशिक' को परिभाषित करते हुए लिखा है – "हम उत्तर–औपनिवेशिक पद का प्रयोग समूची संस्कृति पर साम्राज्यवादी प्रक्रिया (उपनिवेश कायम करने के समय से ले कर आज तक) के प्रभावों को समेटने के अर्थ में करते हैं, इसलिए कि योरपीय साम्राज्यवादी हमले से आरम्भ हुई ऐतिहासिक प्रक्रियाओं से संलग्न निरन्तरताएँ कायम हैं।"[3]

मीनाक्षी मुखर्जी के शब्दों में– "उत्तर औपनिवेशिकता साम्राज्यों के पतन के बाद के समय को अंकित करने वाली कालवाचक संज्ञा मात्रा नहीं है।विचारधारात्मक रूप से वह एक मुक्तिदायी अवधारणा है, ख़ास तौर पर पश्चिमी दुनिया के बाहर रहने वाले साहित्य के अध्येताओं के लिए, क्योंकि वह हमें साहित्य के अध्ययन के उन तमाम अध्यायों को प्रश्नांकित करने में सक्षम बनाती है, जिन्हें हम मान कर चले थे। यह अवधारणा हमें न केवल अपनी कृतियों को अपनी शर्तों पर पढ़ने में सक्षम बनाती है, बल्कि योरप की मानक कृतियों का हमारे अपने विशिष्ट ऐतिहासिक और भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में पुनर्पाठ करने में भी हमें सक्षम बनाती है।"[4]

सामान्य रूप से कहां जा सकता है कि यूरोपीय राष्ट्रों व उनके द्वारा उपनिवेश बनाए गए समाजों के बीच की अंतः क्रियाओं का अध्ययन उत्तर–औपनिवेशिक विमर्श कहलाता है।

विकास

उत्तर औपनिवेशिक विमर्श का विकास औपनिवेशिक सत्ता के विरोध और उपनिवेशित समाजों की पहचान की पुनर्खाज से जुड़ा है।

1. **औपनिवेशिक दौरः** इस अवधि में उपनिवेशित समाजों ने यूरोपीय सत्ता और संस्कृति के प्रभुत्व का अनुभव किया। शिक्षा, भाषा और प्रशासन के माध्यम से औपनिवेशिक मानसिकता समाज में व्याप्त हो गई।

2. **स्वतंत्रता संग्राम और राजनीतिक आज़ादीः** राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी मानसिक और सांस्कृतिक प्रभुत्व बना रहा। इसी समय उत्तर औपनिवेशिक दृष्टिकोण विकसित हुआ।

3. **सैद्धांतिक विकासः** बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में, एडवर्ड सईद की Orientalism (1978) ने पश्चिम के द्वारा रचित "अन्य" की अवधारणा पर जोर दिया। इसके बाद होमी भाभा ने सांस्कृतिक हाइब्रिडिटी और सत्ता–संबंधों पर विचार प्रस्तुत किए। गायत्री स्पिवाक ने उपनिवेशित समाजों की आवाज़ और उनके प्रतिनिधित्व के मुद्दों को प्रमुखता दी।

4. **आधुनिक विमर्शः** आज उत्तर औपनिवेशिक विमर्श साहित्य, समाजशास्त्र, इतिहास और राजनीति में उपनिवेशवाद के प्रभाव और प्रतिरोध की समीक्षा के लिए एक व्यापक आलोचनात्मक दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह विमर्श उपनिवेशित समाजों की पहचान, भाषा, संस्कृति और सत्ता संरचनाओं के पुनर्निर्माण का मार्ग दर्शाता है।

इस प्रकार, उत्तर औपनिवेशिक विमर्श न केवल उपनिवेशवाद के इतिहास का अध्ययन है, बल्कि यह आधुनिक समाज में मानसिक, सांस्कृतिक और वैचारिक स्वतंत्रता की खोज का भी एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

प्रमुख सिद्धांतकार और उनके विचार

उत्तर औपनिवेशिक विमर्श के विकास में कई प्रमुख सिद्धांतकारों का योगदान रहा है। इनके विचार न केवल उपनिवेशवाद के प्रभावों की पहचान करते हैं, बल्कि इसके सांस्कृतिक और मानसिक प्रतिरोध के मार्ग भी प्रस्तुत करते हैं।

1. एडवर्ड सईद (Edward Said)

"सन् 78 में एडवर्ड सईद की पुस्तक 'ओरिएंटलिज्म' का प्रकाशन, उत्तर–औपनिवेशिक अध्ययन की प्राथमिक अभिव्यक्ति माना जा सकता है। सईद की इस कालजयी कृति में पूरब के बारे में पश्चिम के समूचे ज्ञानात्मक उत्पादनों के भीतर छिपे आधिपत्य के सम्बन्धों का खुलासा किया गया है। सईद की कृति ज्ञान मीमांसा की उस उत्तर–आधुनिक धारणा का महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है जिसके अनुसार समूचा ज्ञानात्मक उत्पादन यथार्थ की प्रस्तुति नहीं बल्कि उसकी निर्मिति है। ज्ञान की निर्मिति अनिवार्यतः शक्ति सम्बन्धों से संचालित होती है। पूरब के बारे में योरप ने जिस ज्ञान का सृजन किया, वह योरपीय आधिपत्य वर्चस्व को मज़बूत बनाने की नीयत से संचालित था। ज्ञान निरपेक्ष सत्य नहीं, बल्कि एक तरह का आख्यान है जिसका स्वरूप इस बात से निर्धारित होता है कि उसका सृजन किन लोगों ने, किन के बारे में और किन उद्देश्यों से किया। इसमें संदेह नहीं कि सईद की इस कृति ने पूरे औपनिवेशिक अनुभव के गंभीर पुनर्मूल्यांकन की दिशा खोल दी। जहाँ मिशेल फूको आदि उत्तर–आधुनिक ज्ञानशास्त्रियों ने ज्ञान के योरपीय वर्चस्व को प्रमुखतः योरपीय प्रसंगों में उद्घाटित किया, वहीं सईद की पुस्तक ने उसे पूरब के प्रसंग में उद्घाटित करके गहरा राजनीतिक आयाम प्रदान किया।"[5]

सईद ने अपनी प्रसिद्ध कृति Orientalism (1978) में यह स्पष्ट किया कि पश्चिमी दुनिया ने "पूरब" (Orient) को केवल राजनीतिक या भौगोलिक दृष्टि से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और बौद्धिक दृष्टि से भी "अन्य" (Other) के रूप में प्रस्तुत किया।

उनके अनुसार, उपनिवेशवाद केवल भौतिक नियंत्रण नहीं, बल्कि ज्ञान और संस्कृति के माध्यम से मानसिक प्रभुत्व का भी साधन था।

सईद ने यह दिखाया कि कैसे औपनिवेशित समाजों की सांस्कृतिक पहचान को पश्चिमी दृष्टिकोण ने हाशिए पर डाल दिया।

2. होमी के. भाभा (Homi K- Bhabha)

भाभा ने अपने विचारों में सांस्कृतिक हाइब्रिडिटी और मूल/अन्य के बीच के अंतराल पर जोर दिया। भाभा के अनुसार –"उपनिवेशवादी विमर्श का लक्ष्य उपनिवेशित को नस्लवादी मूल के आधार पर पतित समाज कहकर मानसिक तौर पर कमज़ोर तथा हीनभावना से ग्रस्त कर देना है, ताकि वे अपने शासन के अधिकार, अपनी शोषक छद्म नीतियों को जायज ठहरा सकें।"[6]

भाभा का दृष्टिकोण बताता है कि प्रतिरोध केवल संघर्ष नहीं, बल्कि सांस्कृतिक मिश्रण और पुनर्निर्माण के माध्यम से भी संभव है।

3. गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक (Gayatri Chakravorty Spivak)

स्पिवाक ने उपनिवेशित समाजों, विशेषकर महिलाओं की आवाज़ और उनके प्रतिनिधित्व पर ध्यान केंद्रित किया। उनकी प्रसिद्ध निबंध Can the Subaltern Speak? इस सवाल को उठाती है कि क्या सामाजिक और सांस्कृतिक उत्पीड़न के शिकार लोग स्वयं अपनी बात कह सकते हैं, या उनके लिए सत्ता और भाषाई संरचनाएँ हमेशा नियंत्रक बनी रहती हैं। 'दमित अध्ययन' में स्त्रियों की दशा कितनी खराब होगी, इसके विषय में स्पीवाक ने कहा कि– "औपनिवेशिक इतिहास–लेखन तथा विद्रोही तत्त्व को देखते हुए लिंग की विचारधारात्मक संरचना ने पुरुष वर्चस्व को बनाए रखा। यदि औपनिवेशिक उत्पादन के रूप में देखा जाए तो दमित का कोई इतिहास नहीं, वह बोल नहीं सकता, एक दमित के रूप में स्त्री की हालत इससे भी बुरी होगी।"[7]

इन सिद्धांतकारों के विचार मिलकर यह दर्शाते हैं कि उत्तर औपनिवेशिक विमर्श केवल ऐतिहासिक अध्ययन नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक, भाषाई और मानसिक प्रतिरोध की प्रक्रिया है। यह समाजों को अपने इतिहास और संस्कृति के पुनर्निर्माण के लिए जागरूक करता है और उपनिवेशवाद के प्रभावों से मुक्त होने का मार्ग प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष

उत्तर औपनिवेशिक विमर्श आधुनिक आलोचना की वह दिशा है, जिसने उपनिवेशवाद के राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मानसिक प्रभावों का गहन अध्ययन प्रस्तुत किया। इस विमर्श ने यह स्पष्ट किया कि उपनिवेशवाद केवल भौतिक शासन का साधन नहीं था, बल्कि यह मानसिक और सांस्कृतिक नियंत्रण का भी माध्यम था।

इस शोध–पत्र में यह देखा गया कि उत्तर औपनिवेशिकता न केवल प्रतिरोध की दृष्टि है, बल्कि यह सांस्कृतिक पुनर्निर्माण, आत्म–पहचान की खोज और वैचारिक स्वतंत्रता का भी प्रतीक है। प्रमुख सिद्धांतकारों जैसे एडवर्ड सईद, होमी भाभा, गायत्री स्पिवाक और बिल ऐशक्रॉफ्ट ने इस विमर्श को वैश्विक और भारतीय संदर्भ में स्थापित किया। उनके विचार उपनिवेशवाद के प्रभावों और प्रतिरोध के तरीकों को समझने में मार्गदर्शक सिद्ध हुए।

अंततः, उत्तर औपनिवेशिक विमर्श न केवल ऐतिहासिक अध्ययन का विषय है, बल्कि यह आधुनिक समाज में पहचान, भाषा, संस्कृति और सत्ता के संबंधों की समझ के लिए एक सशक्त आलोचनात्मक उपकरण भी है। यह विमर्श उपनिवेशवाद के प्रभावों से मुक्ति और आत्मसत्यापन की दिशा में विचारशील और सक्रि का निभाता है।

सन्दर्भ

1. सर्वेश कुमार मौर्य, उत्तर–औपनिवेशिक विमर्श, पृ. 26–27
2. सर्वेश कुमार मौर्य, उत्तर–औपनिवेशिक विमर्श, पृ. 27
3. प्रणय कृष्ण, उत्तर औपनिवेशिकता के स्रोत और हिन्दी साहित्य, पृ.19
4. प्रणय कृष्ण, उत्तर औपनिवेशिकता के स्रोत और हिन्दी साहित्य, पृ. 23
5. प्रणय कृष्ण, उत्तर औपनिवेशिकता के स्रोत और हिन्दी साहित्य, पृ. 18
6. सर्वेश कुमार मौर्य, उत्तर–औपनिवेशिक विमर्श, पृ. 46
7. सर्वेश कुमार मौर्य, उत्तर–औपनिवेशिक विमर्श, पृ. 48